

मोड्यूल संख्या - 2 (भाग - 2)  
MODULE NO. 2 (PART- 2)

कक्षा- आठवीं

विषय - हिंदी (द्वितीय भाषा)

पाठ - दीवानों की हस्ती

Ramesh Chand  
T.G.T  
AECS-1, Mumbai

हमने 'दीवानों की हस्ती' कविता से पहले तीन पद मोड्यूल भाग - 1 में पढ़े हैं | उसी कालांश में कवि परिचय के साथ-साथ कविता के सारांश का भी अध्ययन किया था | मोड्यूल भाग - 2 में 'हम दीवानों की हस्ती' कविता के शेष तीन पदों का आदर्श वाचन करते हुए भावार्थ एवं व्याख्या का अध्ययन करेंगे |

(पद संख्या - 4)

दो बात कही , दो बात सुनी;  
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए |  
छककर सुख दुःख के घूँटों को,  
हम एक भाव से लिए चले |

**शब्दार्थ** - छककर - मन भरकर  
सुख-दुख के घूँट - जीवन के सुख - दुःख के अनुभव

**भावार्थ** - कवि नेने बताया है कि ये दीवाने जब दुनिया के लोगों से मिलते हैं तो कुछ अपने मन की बातें , मन के भाव दूसरों से कहते हैं और दूसरे के मन की बातें और मन के भाव खुद सुनते हैं वे दूसरों की और अपनी बातें साझा करके कुछ हँस लेते हैं तो कुछ रो लेते हैं | वे मन भरकर जीवन के सुख - दुःख के अनुभवों को सहते हैं | वे चाहे सुख में हों या दुःख में हों, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो , वे एक जैसे बने रहते हैं | वे सुखों को देखकर इतराते नहीं है , दुखों को देखकर ज्यादा रोते नहीं हैं | वे इस बात को बात मानते हैं कि सुख और

दुःख जीवन जीवन में स्थायी नहीं हैं | वे दुनिया के लोगों को भी सुख-दुःख को एक समान भाव से सहन करने का संदेश देते हैं |

(पद संख्या - 5)

हम भिखमंगों की दुनिया में,  
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,  
हम एक निसानी - सी उर पर,  
ले असफलता का भार चले |

शब्दार्थ - भिखमंगों - भीख माँगने वाले  
स्वच्छंद - स्वतंत्र  
निसानी - पहचान चिह्न  
उर - हृदय

**भावार्थ** - इस काव्यांश में कवि ने इस संसार को भिखमंगा कहा है क्योंकि इस संसार का स्वभाव ही ऐसा है कि वह दूसरों से केवल लेना ही जानता है , देना नहीं जानता | यह बलिदानी वीरों को प्यार ,मोहब्बत तथा यशोगान गाकर हौंसला नहीं बढ़ा सकता | ये दीवाने सभी पर स्वच्छंद प्रेम लुटाते हुए आगे बढ़ते हैं | उनके हृदय पर एक ही असफलता की निशानी है कि अत्यधिक संघर्ष करने के बावजूद भी वे ब्रिटिश सरकार से देश आजादी न दिला सके | अर्थात देश स्वतंत्र नहीं हो सका |

(पद संख्या - 6)

अब अपना और पराया क्या ?  
आबाद रहें रुकने वाले !  
हम स्वयं बंधे थे और स्वयं  
हम अपने बंधन तोड़ चले |

शब्दार्थ - पराया - दूसरा  
आबाद - बसना  
स्वयं - अपने आप  
बंधन - बेड़ियाँ

**भावार्थ** - दीवाने वीर कहते हैं कि हमारे लिए इस दुनिया में रहने वाले विभिन्न धर्मों , जातियों ,वर्गों ,सम्प्रदायों के लोग एक समान हैं।अब हमारे लिए कोई अपना- पराया नहीं है । इसलिए वे संसार के लोगों को सम्बोधित करके कहते हैं कि आप संसार में खूब लदो-बदो, फूलों- फलों | खुशियों के साथ जीवन यापन करो | उनका मानना है कि इस दुनिया में बसने की इच्छा से लोगों से नाते रिश्ते बनाकर अपना और पराया के बंधन में बंद गए |अब उन नाते -रिश्तों को स्वयं तोड़कर बलिदान की राह पर चलते हुए आगे बढ़ रहे हैं | किसी ने हमें यह राह अपनाने के प्रेरित नहीं किया |

---